BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)

An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research

Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं का आर्थिक स्वावलंबन एवं जीवन स्तर: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन (पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिलों के संदर्भ में)

Firdos Aziz Khan Pathan

Economic

Dr. Sanjay Warode

G. S. College, Khamgaon

Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati

Email : firdossyed642@gmail.com

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों (Self-Help Groups—SHGs) की भूमिका के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन और जीवन स्तर से संबंधित उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण करना है। अध्ययन का भौगोलिक संदर्भ पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिले हैं, जहाँ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को तुलनात्मक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। स्वयं सहायता समूह महिलाओं को नियमित बचत, ऋण की उपलब्धता, छोटे व्यवसायों की स्थापना तथा सामूहिक निर्णय-प्रक्रिया में भागीदारी के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक सहभागिता और परिवार में भूमिका पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है।

यह शोध-पत्र द्वितीयक स्रोतों, प्रकाशित शोध-अध्ययनों तथा संस्थागत रिपोर्टों पर आधारित साहित्य समीक्षा है। इसमें आर्थिक स्वावलंबन, वित्तीय समावेशन, स्वरोजगार, बचत, ऋण, सामाजिक सशक्तिकरण और जीवन स्तर के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गई है। साहित्य से यह संकेत मिलता है कि स्वयं सहायता समूहों के लाभ केवल समूह की सदस्यता पर निर्भर नहीं करते, बल्कि प्रशिक्षण, बाजार तक पहुँच, बैंकिंग सुविधाओं, समूह की कार्यप्रणाली और स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होते हैं। शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के बीच वास्तविक अंतर निर्धारित करने के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण आवश्यक होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन उपलब्ध साहित्य के आधार पर निष्कर्ष और नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक स्वावलंबन, जीवन स्तर, वित्तीय समावेशन, ग्रामीण एवं शहरी विकास।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

1. प्रस्तावना (Introduction)

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण समावेशी और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। किसी भी अर्थव्यवस्था का विकास केवल उत्पादन और आय में वृद्धि से नहीं, बल्कि इस बात से भी निर्धारित होता है कि विकास के अवसर समाज के विभिन्न वर्गों तक किस सीमा तक पहुँचते हैं। महिलाओं को आय अर्जित करने, बचत करने, वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने और परिवार के आर्थिक निर्णयों में भाग लेने के अवसर मिलना आवश्यक है।

भारत में अनेक महिलाएँ घरेलू कार्यों, कृषि, पशुपालन, छोटे व्यवसायों और अन्य अनौपचारिक आर्थिक गतिविधियों में योगदान देती हैं। इसके बावजूद उनके श्रम को हमेशा पर्याप्त आर्थिक मान्यता नहीं मिलती। नियमित आय का अभाव, ऋण प्राप्त करने में कठिनाई, प्रशिक्षण की कमी, बाजार तक सीमित पहुँच और सामाजिक परंपराएँ उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकती हैं।

स्वयं सहायता समूह महिलाओं को सामूहिक रूप से संगठित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इन समूहों में सदस्य सामान्यतः नियमित बचत करते हैं, आपसी सहयोग के आधार पर छोटे ऋण उपलब्ध कराते हैं और आवश्यकता पड़ने पर बैंक ऋण से जुड़ते हैं। समूहों की गतिविधियों में प्रशिक्षण, छोटे उद्यम, कृषि-संबंधी कार्य, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प तथा अन्य आय अर्जित करने वाले कार्य शामिल हो सकते हैं।

भारत सरकार का दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) ग्रामीण गरीब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संगठित करने तथा आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। प्रेस सूचना ब्यूरो की 9 अगस्त 2024 की जानकारी के अनुसार, 30 जून 2024 तक इस मिशन के अंतर्गत 28 राज्यों और 6 केंद्रशासित प्रदेशों के 742 जिलों में 10.05 करोड़ महिलाओं को 90.86 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों में संगठित किया गया था (Ministry of Rural Development, 2024)। यह आँकड़ा कार्यक्रम के व्यापक विस्तार को दर्शाता है, लेकिन इससे अपने-आप यह सिद्ध नहीं होता कि प्रत्येक सदस्य की आय या जीवन स्तर में समान वृद्धि हुई है।

पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिलों में कृषि, छोटे व्यवसाय, सेवा क्षेत्र और स्थानीय रोजगार महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार, परिवहन, बैंकिंग, प्रशिक्षण तथा रोजगार के अवसर अलग-अलग हो सकते हैं। इसलिए इन दोनों क्षेत्रों के संदर्भ में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को समझना उपयोगी है।

2. शोध समस्या एवं अध्ययन का महत्व

स्वयं सहायता समूहों का उद्देश्य महिलाओं को बचत, ऋण और सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक रूप से सक्षम बनाना है। फिर भी समूह की सदस्यता और वास्तविक आर्थिक स्वावलंबन के बीच संबंध अनेक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। कुछ महिलाओं को समूह के माध्यम से व्यवसाय शुरू करने का अवसर मिल सकता है, जबकि अन्य महिलाएँ ऋण का उपयोग घरेलू आवश्यकताओं के लिए कर सकती हैं या बाजार और प्रशिक्षण की कमी के कारण व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पातीं।

इसलिए मुख्य शोध समस्या यह है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन एवं जीवन स्तर में किस प्रकार योगदान दे सकते हैं और इस प्रक्रिया में शहरी तथा ग्रामीण परिस्थितियाँ किस तरह महत्वपूर्ण होती हैं।

इस अध्ययन का महत्व तीन कारणों से है। पहला, यह महिला सशक्तिकरण को केवल ऋण प्राप्त करने तक सीमित न रखकर आय, बचत, निर्णय क्षमता और जीवन स्तर से जोड़ता है। दूसरा, यह शहरी एवं ग्रामीण परिस्थितियों की तुलना करने के लिए

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

उपयोगी विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है। तीसरा, यह भविष्य में अकोला, वाशिम और बुलढाणा जिलों में प्राथमिक सर्वेक्षण करने के लिए शोध के संभावित क्षेत्रों की पहचान करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा और महिला सशक्तिकरण में उनकी भूमिका को समझना।

2. महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन में बचत, ऋण और स्वरोजगार के महत्व का अध्ययन करना।

3. महिलाओं के जीवन स्तर, पारिवारिक निर्णय क्षमता और सामाजिक सहभागिता से संबंधित उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण करना।

4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों के कार्य को प्रभावित करने वाले संभावित कारकों की पहचान करना।

5. पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिलों के संदर्भ में भविष्य के क्षेत्रीय अध्ययन की आवश्यकता को स्पष्ट करना।

6. स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध प्रश्न

1. स्वयं सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन में किन माध्यमों से योगदान दे सकते हैं?

2. बचत और ऋण की उपलब्धता महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है?

3. महिलाओं के जीवन स्तर और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता से स्वयं सहायता समूहों का क्या संबंध हो सकता है?

4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में समूहों की गतिविधियों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-से हैं?

5. प्रशिक्षण, बैंकिंग सुविधाएँ और बाजार तक पहुँच समूहों के लाभ को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं?

5. शोध परिकल्पनाएँ

इस साहित्य समीक्षा के आधार पर निम्नलिखित परीक्षण योग्य परिकल्पनाएँ प्रस्तावित हैं:

परिकल्पना 1: स्वयं सहायता समूहों में सक्रिय भागीदारी और महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन के बीच सकारात्मक संबंध हो सकता है।

परिकल्पना 2: नियमित बचत, उपयुक्त ऋण और उद्यमिता प्रशिक्षण तक पहुँच महिलाओं की आय अर्जित करने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

परिकल्पना 3: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार, रोजगार, बैंकिंग और प्रशिक्षण सुविधाओं के अंतर के कारण स्वयं सहायता समूहों से प्राप्त लाभों में अंतर हो सकता है।

परिकल्पना 4: स्वयं सहायता समूहों की बैठकों और सामूहिक निर्णयों में सक्रिय भागीदारी महिलाओं की आर्थिक निर्णय क्षमता और सामाजिक सहभागिता से संबंधित हो सकती है।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

इन परिकल्पनाओं की पुष्टि या अस्वीकृति के लिए प्राथमिक सर्वेक्षण अथवा उपयुक्त क्षेत्रीय आँकड़ों का विश्लेषण आवश्यक होगा।

6. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूहों पर उपलब्ध शोध यह बताता है कि समूह आधारित कार्यक्रमों के परिणाम अनेक आयामों में दिखाई दे सकते हैं। इनमें वित्तीय सेवाओं तक पहुँच, आय पर नियंत्रण, परिवार के भीतर निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक संबंध और सामुदायिक सहभागिता शामिल हैं।

Brody et al. (2015) ने आर्थिक स्वयं सहायता समूहों पर व्यवस्थित साहित्य समीक्षा में 23 मात्रात्मक और 11 गुणात्मक अध्ययनों के निष्कर्षों का विश्लेषण किया। समीक्षा में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के कुछ पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव के प्रमाण मिले। साथ ही, अध्ययन ने यह भी रेखांकित किया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपस्थिति, स्थानीय परिस्थितियाँ और समूहों की संरचना परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि केवल समूह में सदस्यता होना पर्याप्त नहीं है; समूह को प्रभावी ढंग से संचालित करना और महिलाओं को आवश्यक कौशल प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है।

Kumar et al. (2021) ने भारत के पाँच राज्यों की 1,470 ग्रामीण महिलाओं से संबंधित आँकड़ों का उपयोग करके स्वयं सहायता समूहों और कृषि में महिला सशक्तिकरण के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में समग्र सशक्तिकरण के कुछ मापों में सकारात्मक प्रभाव दिखाई दिया, विशेषकर आय पर नियंत्रण, ऋण संबंधी निर्णय और समूह गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के संदर्भ में। हालाँकि, सभी आयामों में समान प्रभाव नहीं मिला। इससे संकेत मिलता है कि समूहों का प्रभाव महत्वपूर्ण हो सकता है, परंतु वह हर सामाजिक और पारिवारिक समस्या का अपने-आप समाधान नहीं है।

NABARD की Highlights of the SHG-Bank Linkage Programme 2022–23 रिपोर्ट स्वयं सहायता समूहों और बैंकिंग व्यवस्था के बीच संबंध को समझने के लिए महत्वपूर्ण संस्थागत स्रोत है। रिपोर्ट के अनुसार, 31 मार्च 2023 तक 134.03 लाख स्वयं सहायता समूह बैंकों से बचत के लिए जुड़े हुए थे, जिनमें 112.92 लाख विशेष रूप से महिला समूह थे। वर्ष 2022–23 में 42.96 लाख समूहों को ऋण उपलब्ध कराया गया (NABARD, 2023)। ये आँकड़े बैंकिंग से जुड़ाव के विस्तार को दर्शाते हैं, लेकिन ऋण की उपलब्धता और ऋण के सफल उत्पादक उपयोग में अंतर को ध्यान में रखना चाहिए।

भारत सरकार की DAY-NRLM संबंधी जानकारी में वित्तीय समावेशन, प्रशिक्षण, कृषि एवं गैर-कृषि आजीविका, सूक्ष्म उद्यम और बाजार तक पहुँच को महिलाओं की आजीविका के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में रेखांकित किया गया है (Ministry of Rural Development, 2024)। यह दृष्टिकोण बताता है कि समूहों की प्रभावशीलता के लिए केवल वित्तीय सहायता ही नहीं, बल्कि कौशल, तकनीकी सहायता और विपणन सुविधाएँ भी आवश्यक हैं।

उपलब्ध साहित्य की एक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि भारत के व्यापक अनुभवों को सीधे पश्चिम विदर्भ के प्रत्येक जिले पर लागू नहीं किया जा सकता। अकोला, वाशिम और बुलढाणा जिलों में समूहों की सक्रियता, महिलाओं की आय, बचत, ऋण के उपयोग, रोजगार और जीवन स्तर के बारे में विशिष्ट निष्कर्ष निकालने के लिए स्थानीय स्तर पर प्रमाण आवश्यक हैं।

7. शोध अंतर (Research Gap)

उपलब्ध साहित्य स्वयं सहायता समूहों और महिला सशक्तिकरण के बीच संभावित संबंधों को समझने में सहायता करता है। फिर भी पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिलों के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की परिस्थितियों की प्रत्यक्ष तुलना के लिए स्थानीय आँकड़ों की आवश्यकता है।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

विशेष रूप से निम्नलिखित पहलुओं पर क्षेत्रीय शोध उपयोगी हो सकता है:

- समूह की बैठकों और बचत गतिविधियों में महिलाओं की सक्रियता।

- ऋण का उपयोग व्यवसाय, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य या घरेलू जरूरतों में किस प्रकार होता है।

- समूह की सदस्यता से आय, बचत और व्यक्तिगत आर्थिक निर्णयों में क्या परिवर्तन जुड़े हैं।

- प्रशिक्षण, डिजिटल बैंकिंग और बाजार तक पहुँच की उपलब्धता।

- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में समूहों की गतिविधियों और परिणामों में संभावित अंतर।

इस प्रकार वर्तमान पेपर इन प्रश्नों के लिए साहित्य आधारित रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह दावा नहीं करता कि इन जिलों में सर्वेक्षण करके किसी अंतर को पहले ही प्रमाणित कर दिया गया है।

8. शोध-पद्धति (Research Methodology)

यह शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति की द्वितीयक साहित्य समीक्षा पर आधारित है। इसमें प्रकाशित शोध-पत्रों, संस्थागत रिपोर्टों और भारत सरकार के उपलब्ध दस्तावेजों से संबंधित जानकारी का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र: पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिले।

विश्लेषण की इकाई: स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाएँ तथा उनके आर्थिक स्वावलंबन और जीवन स्तर से संबंधित साहित्य।

डेटा का स्वरूप: इस पेपर में प्राथमिक सर्वेक्षण के आँकड़े एकत्र नहीं किए गए हैं। अतः इसमें किसी नमूने का आकार, उत्तरदाताओं की संख्या या स्थानीय प्रतिशत प्रस्तुत नहीं किया गया है।

विश्लेषण की विधि: साहित्य में वर्णित निष्कर्षों को आर्थिक स्वावलंबन, वित्तीय समावेशन, रोजगार, निर्णय क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन स्तर जैसे विषयों के आधार पर व्यवस्थित करके समझा गया है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना के लिए संभावित प्रभावकारी कारकों की पहचान की गई है।

सीमाएँ: उपलब्ध साहित्य के आधार पर किसी विशेष जिले या क्षेत्र के बारे में निश्चित कारणात्मक निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते। इसके लिए प्रतिनिधिक नमूने पर आधारित प्राथमिक सर्वेक्षण, उचित प्रश्नावली और सांख्यिकीय विश्लेषण आवश्यक होंगे।

9. स्वयं सहायता समूह और आर्थिक स्वावलंबन

आर्थिक स्वावलंबन का अर्थ केवल आय प्राप्त करना नहीं है। इसमें अपनी आय का उपयोग करने की क्षमता, बचत करने की आदत, ऋण संबंधी निर्णय, आर्थिक जोखिमों का सामना करने की योग्यता और परिवार के आर्थिक निर्णयों में भागीदारी भी शामिल हैं।

स्वयं सहायता समूह नियमित बचत को प्रोत्साहित करके महिलाओं में वित्तीय अनुशासन विकसित करने में मदद कर सकते हैं। सामूहिक बचत और बैंक से जुड़ाव के कारण कुछ महिलाओं को औपचारिक वित्तीय सेवाओं तक पहुँच मिल सकती है।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

आवश्यकता के समय उपयुक्त ऋण उपलब्ध होने पर महिलाएँ छोटे व्यवसाय, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, सिलाई, हस्तशिल्प या अन्य आय अर्जित करने वाली गतिविधियाँ शुरू करने का प्रयास कर सकती हैं।

हालाँकि, ऋण को अपने-आप आर्थिक स्वावलंबन का प्रमाण नहीं माना जा सकता। यदि व्यवसाय के लिए पर्याप्त बाजार नहीं है, लागत अधिक है या प्रशिक्षण की कमी है, तो ऋण चुकाना कठिन हो सकता है। इसलिए वित्तीय सहायता के साथ व्यवसाय योजना, लेखांकन, विपणन और जोखिम प्रबंधन का प्रशिक्षण भी जरूरी है।

महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन का आकलन करते समय यह देखना चाहिए कि आय अर्जित करने की गतिविधि कितनी नियमित है, महिला को आय पर कितना नियंत्रण है और क्या वह अपने आर्थिक निर्णय स्वतंत्र रूप से ले पाती है। इससे समूह की सफलता को केवल ऋण वितरण या सदस्य संख्या के आधार पर मापने की सीमा दूर हो सकती है।

10. महिलाओं के जीवन स्तर पर संभावित प्रभाव

जीवन स्तर एक बहुआयामी अवधारणा है। इसमें परिवार की आय और उपभोग के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आवास, स्वच्छता, वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक सहभागिता जैसे पहलू शामिल हैं।

यदि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिला की आय में स्थिरता आती है, तो परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में सुधार हो सकता है। बचत की आदत आकस्मिक खर्चों के समय मदद कर सकती है। आर्थिक निर्णयों में महिला की भागीदारी बढ़ने पर शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य पारिवारिक आवश्यकताओं पर खर्च के संबंध में उसकी आवाज मजबूत हो सकती है।

फिर भी जीवन स्तर में सुधार कई कारकों पर निर्भर करता है। परिवार का आकार, रोजगार की प्रकृति, स्वास्थ्य संबंधी खर्च, बाजार की स्थिति और महिला के घरेलू कार्यों का बोझ भी परिणामों को प्रभावित करते हैं। इसलिए स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का मूल्यांकन करते समय केवल आय में परिवर्तन नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा और संसाधनों पर महिला के वास्तविक नियंत्रण को भी ध्यान में रखना चाहिए।

11. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों का तुलनात्मक विश्लेषण

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों की गतिविधियों की प्रकृति अलग हो सकती है। इस अंतर को निश्चित परिणाम मानने के बजाय संभावित कारकों के रूप में समझना उचित है।

11.1 ग्रामीण क्षेत्र

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, स्थानीय हस्तशिल्प और छोटे व्यापार महिलाओं की आजीविका के संभावित स्रोत हो सकते हैं। समूहों के माध्यम से महिलाएँ बचत, ऋण और सामूहिक आर्थिक गतिविधियों से जुड़ सकती हैं। सामूहिक रूप से उत्पाद तैयार करने या बेचने से लागत और बाजार तक पहुँच की कुछ समस्याएँ कम हो सकती हैं।

दूसरी ओर, परिवहन की कमी, सीमित बाजार, मौसमी आय, प्रशिक्षण के अवसरों का अभाव और घरेलू कार्यों का बोझ समूहों की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकते हैं। ग्रामीण महिलाओं के लिए उत्पादन के साथ-साथ उत्पादों की गुणवत्ता, पैकेजिंग, मूल्य निर्धारण और बाजार से स्थायी संबंध बनाना भी आवश्यक है।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

11.2 शहरी क्षेत्र

शहरी क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों की महिलाएँ घरेलू उद्योग, सिलाई, खाद्य उत्पाद, छोटे खुदरा व्यवसाय, सेवाओं और अन्य स्वरोजगार गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। कुछ स्थानों पर ग्राहकों और बाजार तक पहुँच अपेक्षाकृत आसान हो सकती है, लेकिन प्रतिस्पर्धा, किराया, परिवहन और व्यवसाय संचालन की लागत भी अधिक हो सकती है।

शहरी महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों पर शिक्षा, कौशल, काम के अवसर, डिजिटल भुगतान और बाजार की जानकारी का प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए केवल शहरी क्षेत्र में रहने के आधार पर अधिक आर्थिक स्वावलंबन मान लेना उचित नहीं होगा।

11.3 तुलना के प्रमुख संकेतक

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों का निष्पक्ष तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए निम्न संकेतकों का उपयोग किया जा सकता है:

1. समूह की बैठकों में उपस्थिति और सक्रिय भागीदारी।

2. नियमित बचत और बैंक खाते का उपयोग।

3. ऋण की उपलब्धता और उसके उपयोग का उद्देश्य।

4. महिला की व्यक्तिगत आय तथा आय पर नियंत्रण।

5. स्वरोजगार या व्यवसाय की निरंतरता।

6. परिवार के आर्थिक निर्णयों में भागीदारी।

7. शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य आवश्यकताओं पर खर्च की क्षमता।

8. प्रशिक्षण, डिजिटल वित्तीय सेवाओं और बाजार तक पहुँच।

इन संकेतकों पर प्राथमिक आँकड़े प्राप्त होने के बाद ही यह निर्धारित किया जा सकेगा कि किस क्षेत्र में कौन-से परिणाम बेहतर हैं।

12. चर्चा (Discussion)

उपलब्ध साहित्य से संकेत मिलता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक उपयोगी संस्थागत माध्यम हो सकते हैं। नियमित बचत, ऋण तक पहुँच और समूह में भागीदारी आर्थिक गतिविधियों के लिए अवसर उपलब्ध करा सकती हैं। Kumar et al. (2021) के अध्ययन में आय पर नियंत्रण और ऋण संबंधी निर्णयों जैसे आयामों में सकारात्मक प्रभाव के प्रमाण मिले। Brody et al. (2015) की समीक्षा भी बताती है कि आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के परिणाम कार्यक्रम की प्रकृति तथा प्रशिक्षण जैसी विशेषताओं से प्रभावित हो सकते हैं।

इन निष्कर्षों का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक स्वयं सहायता समूह समान रूप से सफल होता है। समूह की नियमित बैठकें, पारदर्शी लेखांकन, सदस्यों की सक्रियता, ऋण का उचित उपयोग, नेतृत्व की जवाबदेही और बाजार से जुड़ाव महत्वपूर्ण हो सकते हैं। यदि समूह केवल बचत और ऋण वितरण तक सीमित रह जाए तथा महिलाओं को उद्यमिता या विपणन का सहयोग न मिले, तो आर्थिक लाभ सीमित रह सकते हैं।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना करते समय भी एक ही मानक से परिणामों का अनुमान नहीं लगाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आधारित गतिविधियाँ और मौसमी आय महत्वपूर्ण हो सकती हैं, जबकि शहरी क्षेत्र में व्यवसाय की लागत और बाजार की प्रतिस्पर्धा महत्वपूर्ण हो सकती है। इन संभावित अंतरों की पुष्टि स्थानीय स्तर पर आँकड़े एकत्र करके ही की जानी चाहिए।

इसलिए पश्चिम विदर्भ के लिए उपयोगी दृष्टिकोण यह होगा कि समूहों की संख्या के साथ उनकी सक्रियता, सदस्यों के आर्थिक परिणाम, प्रशिक्षण की गुणवत्ता और बाजार तक पहुँच का भी मूल्यांकन किया जाए।

13. प्रमुख निष्कर्ष (Findings)

यहाँ प्रस्तुत निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य की समीक्षा पर आधारित हैं, अकोला, वाशिम और बुलढाणा में किए गए प्राथमिक सर्वेक्षण के परिणाम नहीं हैं।

1. स्वयं सहायता समूह महिलाओं को नियमित बचत, सामूहिक सहयोग और वित्तीय सेवाओं से जुड़ने के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

2. समूह की सदस्यता के लाभ इस बात पर निर्भर कर सकते हैं कि महिलाएँ बैठकों, निर्णयों और आर्थिक गतिविधियों में कितनी सक्रियता से भाग लेती हैं।

3. प्रशिक्षण, वित्तीय साक्षरता, उद्यमिता और बाजार से जुड़ाव आर्थिक गतिविधियों की सफलता के महत्वपूर्ण घटक हैं।

4. महिलाओं का सशक्तिकरण केवल आय या ऋण तक सीमित नहीं है; आय पर नियंत्रण, परिवार में निर्णय क्षमता और सामाजिक सहभागिता भी महत्वपूर्ण हैं।

5. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच संभावित अंतर का निर्धारण करने के लिए स्थानीय स्तर पर समान संकेतकों के आधार पर आँकड़े एकत्र करना आवश्यक है।

6. समूहों की प्रभावशीलता का आकलन करते समय सबसे गरीब और सामाजिक रूप से वंचित महिलाओं की भागीदारी पर भी ध्यान देना चाहिए।

14. सुझाव (Suggestions)

1. कौशल विकास: स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को लेखांकन, डिजिटल भुगतान, व्यवसाय प्रबंधन, उत्पाद की गुणवत्ता और विपणन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

2. बाजार से जुड़ाव: स्थानीय उत्पादों के लिए बिक्री केंद्र, प्रदर्शनियाँ, ऑनलाइन विपणन और सामूहिक ब्रांडिंग की संभावनाओं को बढ़ावा देना चाहिए।

3. वित्तीय साक्षरता: सदस्यों को ब्याज, ऋण की शर्तों, किश्तों, बचत, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटल लेन-देन की जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए।

4. नियमित निगरानी: समूहों की बैठकों, बचत, ऋण के उपयोग और लेखांकन की नियमित समीक्षा की जानी चाहिए। इससे पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ सकती है।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

5. स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार सहायता: ग्रामीण समूहों के लिए कृषि-संबंधित आजीविका, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण पर ध्यान दिया जा सकता है। शहरी समूहों के लिए कौशल आधारित सेवाओं, घरेलू उद्योग और छोटे व्यवसायों के प्रबंधन पर प्रशिक्षण उपयोगी हो सकता है।

6. वंचित महिलाओं की भागीदारी: आर्थिक रूप से कमजोर और सामाजिक रूप से वंचित महिलाओं को समूहों से जोड़ने के लिए स्थानीय स्तर पर जागरूकता और आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

7. डिजिटल समावेशन: बैंकिंग संवाददाताओं, डिजिटल भुगतान और वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

8. प्रभाव का मूल्यांकन: समूहों की सफलता को केवल सदस्य संख्या या वितरित ऋण से नहीं, बल्कि महिलाओं की आय, आय पर नियंत्रण, व्यवसाय की निरंतरता, बचत और निर्णय क्षमता जैसे संकेतकों से भी मापना चाहिए।

9. शहरी-ग्रामीण तुलनात्मक सर्वेक्षण: अकोला, वाशिम और बुलढाणा जिलों में समान प्रश्नावली के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण समूहों का अध्ययन किया जा सकता है। इससे स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार योजनाओं को बेहतर बनाने में सहायता मिलेगी।

15. निष्कर्ष (Conclusion)

स्वयं सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन और सामाजिक सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकते हैं। नियमित बचत, ऋण तक पहुँच, सामूहिक निर्णय, कौशल विकास और आय अर्जित करने वाली गतिविधियों के माध्यम से महिलाएँ आर्थिक अवसरों का लाभ उठा सकती हैं। उपलब्ध साहित्य यह संकेत देता है कि समूहों का प्रभाव आय पर नियंत्रण, ऋण संबंधी निर्णय और सामाजिक सहभागिता जैसे पहलुओं में दिखाई दे सकता है। हालांकि, इन प्रभावों की प्रकृति और सीमा समूह की कार्यप्रणाली, प्रशिक्षण, बाजार, बैंकिंग सुविधाओं और स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

पश्चिम विदर्भ के अकोला, वाशिम एवं बुलढाणा जिलों के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से उपयोगी हो सकता है। लेकिन किस क्षेत्र में महिलाएँ अधिक सक्रिय हैं या किस क्षेत्र में आर्थिक स्वावलंबन अधिक है, इसका निर्णय अनुमान के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। इसके लिए नियमित बचत, बैठकों में भागीदारी, ऋण के उपयोग, आय, निर्णय क्षमता और जीवन स्तर से संबंधित प्राथमिक आँकड़ों की आवश्यकता होगी।

अंततः स्वयं सहायता समूहों की सफलता इस बात से निर्धारित होनी चाहिए कि वे महिलाओं को केवल वित्तीय सहायता तक सीमित रखते हैं या उन्हें आर्थिक निर्णय लेने, टिकाऊ आजीविका विकसित करने और जीवन स्तर सुधारने के वास्तविक अवसर भी प्रदान करते हैं। वित्तीय सहायता के साथ प्रशिक्षण, बाजार तक पहुँच, पारदर्शी संचालन और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नीतिगत सहयोग महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Brody, C., de Hoop, T., Vojtkova, M., Warnock, R., Dunbar, M., Murthy, P., & Dworkin, S. L. (2015). Economic self-help group programs for improving women's

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD)
An Open-Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal | Bi-Monthly | Multilingual | Academic Research
Vol 2, Issue 6 (November-December 2026) (Special Issue 2) | ISSN: 3139-1486 (Online) | ISSN: 3139-9819 (Print)

empowerment: A systematic review. Campbell Systematic Reviews, 11(1). https://doi.org/10.4073/csr.2015.19

2. Kumar, N., Raghunathan, K., Arrieta, A., Jilani, A., & Pandey, S. (2021). The power of the collective empowers women: Evidence from self-help groups in India.
3. Ministry of Rural Development. (2024, August 9). Achievements under Deendayal Antyodaya Yojana–National Rural Livelihoods Mission. Press Information Bureau, Government of India. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?
4. National Bank for Agriculture and Rural Development. (2023). Highlights of the SHG-Bank Linkage Programme 2022–23. https://www.nabard.org/auth/writereaddata/File/highlights-of-the-shg-bank-linkage-programme-2022-23.pdf